दूसरो को नीची नजरों से वही देखता है जिसे अपनी ऊंचाई पर यकीन नहीं होता।
–अज्ञात

कोरोना वायरस का नया रूप

अमेरिका के सेंटर्स फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (सीडीसी) ने इसे वैरिएंट ऑफ कंसर्न यानी वायरस का चिंताजनक रूप कहा है। वैसे तो यह कई देशों में मौजूदगी दर्ज करा चुका है, लेकिन ब्रिटेन तो जैसे इसकी गिरफ्त में आ चुका है।

मोहन जोशी।

कोरोना वायरस का जो नया रूप दुनिया भर में डॉक्टरों और वैज्ञानिकों को चिंतित किए हुए है, वह है डेल्टा वैरिएंट। अमेरिका के सेंटर्स फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (सीडीसी) ने इसे वैरिएंट ऑफ कंसर्न यानी वायरस का चिंताजनक रूप कहा है। वैसे तो यह कई देशों में मौजूदगी दर्ज करा चुका है, लेकिन ब्रिटेन तो जैसे इसकी गिरफ्त में आ चुका है। पब्लिक हेल्थ इंग्लैंड (पीएचई) के आंकड़ों के मुताबिक, वहां इकट्ठा किए जा रहे सैंपल्स में 61 फीसदी मामले डेल्टा वैरिएंट के ही हैं। इसका मतलब यह है कि वहां पिछले साल गदर मचा देने वाले अल्फा वैरिएंट से भी ज्यादा मजबूत स्थिति में डेल्टा वैरिएंट आ गया है। ध्यान रहे किसी वैरिएंट को चिंताजनक श्रेणी में तब डाला जाता है, जब उसकी बढ़ी हुई संक्रामक क्षमता और मरीज को अस्पताल ले जाने की बढ़ी हुई जरूरत के सबूत उपलब्ध हों। इन दोनों ही मोर्चों पर इसकी मजबूती इसे न केवल इंग्लैंड जैसे देशों के लिए बल्कि पूरी दुनिया के स्तर पर खतरनाक बनाती है। गौर करने की बात यह भी है कि मामला डेल्टा वैरिएंट तक ही सीमित नहीं रहा। इसका और परिष्कृत रूप भी आ गया है जिसे डेल्टा प्लस कहा जा रहा है। भारत में अभी इसके मरीजों की संख्या ज्यादा नहीं है, बावजूद इसके महाराष्ट्र के स्वास्थ्य विभाग ने चेताया है कि यही डेल्टा प्लस वैरिएंट कोरोना महामारी की तीसरी लहर का कारण बन सकता है। स्वाभाविक रूप से सरकार ने स्वास्थ्य ढांचे को इसके लिए तैयार करने की कवायद शुरू कर दी है, लेकिन एक तो ऐसी सारी कवायद की आखिरी परीक्षा लहर आने के बाद ही होती है। तभी यह पता लगता है कि सरकार के निर्देश किस हद तक जमीन पर उतरे और दरअसल उसका कितना फायदा प्रभावित लोगों तक पहुंचाया जा सका। मगर उससे ज्यादा जरूरी है खुद को बार–बार याद दिलाना कि वायरस के खिलाफ यह जंग लड़ना और जीतना अकेले सरकार के बूते की बात है ही नहीं। यह लड़ाई तभी जीती जा सकती है, जब एक–एक नागरिक पूरी जागरूकता, सावधानी और शिद्दत से इसमें भागीदारी करे। विशेषज्ञों के मुताबिक अब तक के ऑब्जर्वेशन से यह स्पष्ट है कि वैक्सीन इस वैरिएंट पर भी कारगर हैं। अपने यहां वैक्सिनेशन अभियान में आई थोड़ी सुस्ती इस संदर्भ में चिंता की एक अतिरिक्त बात हो सकती है, लेकिन ताजा प्रयासों की बदौलत उम्मीद है कि यह अभियान जल्दी ही जोर पकड़ेगा। ऐसे में आम लोगों का सहयोग दो स्तरों पर निर्णायक साबित हो सकता है। एक तो यह कि टीका लगवाने को लेकर उदासीनता हर हाल में जल्द से जल्द खत्म की जाए और दूसरा, अनलॉक के दौरान कोरोना प्रोटोकॉल के पालन में वैसी लापरवाही बिल्कुल न हो, जैसी पहली लहर के उतार के बाद दिखाई गई थी।

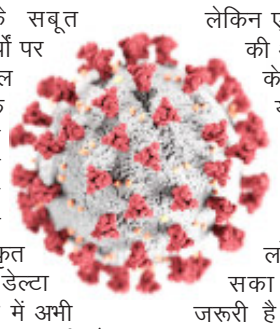

दुष्प्रवृति

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। भगवान से कोई बात छुपी थोड़े ही रहती है। उन्हें तुरंत इस बात का पता चल गया। वे अपने भक्त का पतन भला कैसे देख सकते थे ? इसलिए उन्होंने नारद को इस दुष्प्रवृति से बचाने का निर्णय किया।

एक दिन नारद जी और भगवान विष्णु साथ–साथ वन में जा रहे थे अचानक विष्णु जी एक वृक्ष के नीचे थककर बैठ गए और बोले – भई नारद जी, हम तो थक गए है, प्यास भी लगी है।

कहीं से पानी मिल जाए तो लाओ। हमसे तो प्यास के मारे चला नहीं जा रहा है। हमारा गला सुख रहा है। यह सुनकर नारद जी तुरंत सावधान हो गए, उनके होते हुए भगवान भला प्यासे रहें। वे बोले भगवान अभी लाया आप थोड़ी देर प्रतीक्षा करें। नारद जी एक ओर दौड़ लिए।

संपादकीय

अभी कोई डर नहीं

हाल–फिलहाल जम्मू कश्मीर में किसी बड़ी वारदात का डर नहीं दिख रहा है। पाकिस्तान में बैठकर तालिबान को कंट्रोल करने वालों को पता है कि भारतीय सुरक्षा बल क्या कर सकते हैं और भारत सरकार की नई पॉलिसी कैसी है। लेकिन अगले साल किस्सा अलग भी हो सकता है, खासकर यह देखते हुए कि उत्तर प्रदेश में चुनाव हो रहे होंगे और इस तरह की 'दिक्कत' में किसी बाहरी का हाथ होने का पता लगाना आसान नहीं होगा। अफगानिस्तान में जो भी बवाल हो, यह तो सबको पता है कि किसी विदेशी हमले के खिलाफ अफगान में लोग एकजुट हो जाते हैं। लेकिन बात यह भी है कि विदेशी खतरा हटते ही अफगान बहुत जल्द अपने कबीलों और फिरकों के दायरे में सिमटकर एक–दूसरे पर बंदूकें तान लेते हैं। अफीम सहित नारकोटिक्स के अवैध व्यापार का लालच तो है ही। ऐसे में काफी कुछ इस पर निर्भर करेगा कि अफगानिस्तान का शासन पाकिस्तान में क्वेटा, पेशावर और मीरनशाह की शूरा के इशारों पर चलता है या काबुल में बैठे लोग खुदमुख्तारी से हुकूमत करेंगे। भारत को सतर्क रहना होगा। उन्होंने कहा कि वे तालिबान के साथ हैं और यह उम्मीद भी जताई कि कश्मीर में उनकी नापाक हरकतों में तालिबान मदद करेगा।

उत्तरी–पूर्वी ईरान, अफगानिस्तान के कुछ हिस्सों और मध्य एशिया के दक्षिणी भाग में सक्रिय है। मसला यह है कि अमेरिकी सूत्रों ने जिस फुर्ती से IS–खुरासान पर अंगुली उठाई है, वह एक कमजोर बहानेबाजी की तरह दिख रही है।

दाल में काला

विक्रम सूद।।

काबुल एयरपोर्ट पर 26 अगस्त को भीषण अटैक हुआ, अमेरिकी सैनिकों सहित सैकड़ों लोगों की जान गई, सैकड़ों दूसरे घायल हुए। अमेरिका इस हमले के लिए इस्लामिक स्टेट–खुरासान को जिम्मेदार ठहरा रहा है। IS–खुरासान खुद को IS का हिस्सा बताता है। उत्तरी–पूर्वी ईरान, अफगानिस्तान के कुछ हिस्सों और मध्य एशिया के दक्षिणी भाग में सक्रिय है। मसला यह है कि अमेरिकी सूत्रों ने जिस फुर्ती से IS–खुरासान पर अंगुली उठाई है, वह एक कमजोर बहानेबाजी की तरह दिख रही है।

26 अगस्त को काबुल एयरपोर्ट के पास अटैक हुआ। वहां से शवों और घायलों को हटाया ही जा रहा था कि तभी यह जानकारी जुटा ली गई कि हमला किसने किया। तालिबान के काबुल पहुंचने का अनुमान लगाने में जिस तरह की चूक हुई, उसके मुकाबले एयरपोर्ट वाले मामले में गजब की तेजी दिखी। इससे तो यही लग रहा है कि इस दावे के पीछे कोई खास मकसद है। मकसद एक नया किस्सा फैलाने का।

अमेरिकियों ने अपनी वापसी के बारे में कुछ महीने पहले ही तालिबान से डील की और अब यह हमला हो गया, जिसमें अमेरिकी सैनिक भी मारे गए। अमेरिकियों को यकीनी तौर पर यह सब शर्मनाक लग रहा होगा। लिहाजा हमले के

लिए आईएस–खुरासान को फटाफट जिम्मेवार करार देने का फौरी मकसद है तालिबान, पाकिस्तान और उनके लोगों के जान–माल को फायरिंग लाइन से किनारे करना। आईएस–खुरासान वैसे भी हो सकता है कि हक्कानी नेटवर्क का हिस्सा हो। अमेरिका का यह कदम तालिबान को भी रास आएगा। अफगान लोगों के लिए तो इसका कोई खास मतलब नहीं दिखता कि यह नरसंहार तालिबान ने किया या आईएस–खुरासान ने। हमले का मकसद था अफगानों और अफगानिस्तान में मौजूद विदेशियों में खौफ पैदा करना, जिससे दिखे कि कौन ताकतवर है। और यह मेसेज दिया जा चुका है।

अगर किसी के पास शासन चलाने का हुनर न हो तो अपनी बात मनवाने का एक ही तरीका होता है उसके पास, डर पैदा करना। अभी तो कुछ भी नहीं हुआ है, इस खौफ का असल कहर तो आगे दिखने वाला है, जब तालिबान के लोगों को बायोमीट्रिक डिवाइसेज का इस्तेमाल करना आ जाएगा। अमेरिका ने ये डिवाइसेज अफगानिस्तान में छोड़ दी हैं। उनमें उन अफगान लोगों के फिंगरप्रिंट और आई स्कैन दर्ज हैं, जिन्होंने अमेरिकियों के लिए काम किया, कभी दुभाषिया बने, कभी दूसरी जिम्मेदारियां उठाईं।

अफगानिस्तान जिहाद का अड्डा बनने की राह पर है। अल–कायदा के कई बचे–खुचे गिरोहों ने खुद को तालिबान से जोड़ लिया है। इनके अलावा दूसरे गिरोह भी हैं। आईएस–खुरासान का वजूद सामने आया साल 2015 में। इसमें तहरीक ए तालिबान पाकिस्तान के दहशतगर्द भी शामिल हो गए। इस गेम में हक्कानी नेटवर्क से नजर नहीं हटाई जा सकती। पाकिस्तान से उसका बेहद करीबी रिश्ता है। अमेरिका के जॉइंट चीफ ऑफ स्टाफ के चेयरमैन रहे माइकेल म्यूलेन ने 2011 में कहा था कि हक्कानी नेटवर्क दरअसल पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी इंटर सर्विसेज इंटेलिजेंस का हिस्सा है।

कश्मीर में दखल देगा तालिबान?

तहरीक ए तालिबान पाकिस्तान में कई पाकिस्तानी चरमपंथी सुन्नी गुट शामिल हैं। भारत पर नजर रखने वाले लश्कर ए तैयबा और जैश ए मुहम्मद जैसे आतंकवादी संगठन तालिबान की जीत पर खुशी से उछल पड़े।

सूडोकु नवताल- 5216

*****

				6	8	5		
	1						2	
		2						8
			4					9
6				5				1
2					3			
5						3		
	8						6	
		4	9	1				

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं।
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।
- पहेली का केवल एक ही हल है।

सूडोकु नवताल -5215 का हल

2	4	6	7	9	3	5	8	1
3	1	5	2	8	6	4	7	9
7	8	9	1	5	4	2	3	6
6	5	7	9	3	8	1	4	2
9	3	1	4	7	2	8	6	5
4	2	8	6	1	5	7	9	3
1	9	2	3	4	7	6	5	8
5	7	3	8	6	1	9	2	4
8	6	4	5	2	9	3	1	7

अपना ब्लॉग

हाथ लगा है हथियारों का खजाना

मोहन। अंदाजा यही है कि अपने शासन के शुरुआती कुछ महीनों में तालिबान का फोकस इस बात पर होगा कि इलाके पर उसका दबदबा कायम हो, दूसरे समूहों को काबू कर लिया जाए और हुकूमत एक ठीकठाक ढर्रे पर आ जाए। शायद यही मशविरा उसके पाकिस्तानी आकाओं ने दिया होगा।

पाकिस्तानियों के साथ अब तालिबान के पास इतने ब्लैक हॉक हेलिकॉप्टर हैं, जितने कई देशों के पास नहीं हैं। अनुमान है कि अमेरिकी अपने पीछे 85 अरब डॉलर का साजोसामान छोड़ गए हैं। इसमें 75 हजार गाड़ियां, 200 से ज्यादा हवाई जहाज और हेलिकॉप्टर तो हैं ही, छह लाख से ज्यादा छोटे हथियार भी हैं।

क्या पता आने वाले दिनों में इन्हीं अमेरिकी हथियारों से लैस पाकिस्तानी आतंकवादी जम्मू कश्मीर की ओर बढ़ें। कश्मीर में जिहाद के बारे में तालिबान की ओर से बयान गाहेबगाहे आते रहे हैं। ऐसे में जिहाद का अड्डा अफगानिस्तान से कश्मीर भी शिफ्ट हो सकता है। आखिर अफगानिस्तान पर कब्जा हो जाने के बाद जिहादियों को बिजी भी तो रखना होगा।